



अधिक लाभ कमाने के लिए करें मेन्था की खेती



अजीत कुमार पाण्डेय एवं प्रभात कुमार

“व्यापारिक जगत में जापानी पोदीनें को ही मेन्था अथवा मिन्ट के नाम से जाना जाता है। परन्तु तकनीकी रूप से मेन्था शब्द पोदीने के एक समूह का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें पोदीने की कई प्रजातियाँ सम्मिलित हैं, जिनमें से एक प्रजाति जापानी पोदीना भी है। वर्तमान में विश्व भर में जापानी पोदीना उत्पादन के क्षेत्र में भारत चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। मेन्था के तेल से भिन्न-भिन्न प्रकार के अवयव जैसे मेन्थाल, मेन्थाइल एसीटेट एवं मेन्थॉन प्राप्त किया जाता है। इन अवयवों एवं तेल का उपयोग औषधीय, च्यूर्डगम, टॉफी एवं कैंडी बनाने में प्रयुक्त होते हैं। तेल का उपयोग खॉसी की दवाएँ, आदि में भी किया जाता है। मेन्था फ्लेक्स, मेन्था क्रिस्टल का उपयोग टूथपेस्ट, पान मसाले, बाम, शैम्पू, बबलगम, आफ्टर सेव लोशन आदि में उपयोग होता है।”

प्राचीन काल में रोमन, यूनानी, चीनी और जापानी लोग पुदीने का प्रयोग विभिन्न औषधियों के तौर पर किया करते थे। इन दिनों भारत इंडोनेशिया और पश्चिमी अफ्रीका में बड़े पैमाने पर पुदीने का उत्पादन किया जाता है। लगभग तीस जातियों और पाँच सौ प्रजातियों वाला पुदीने का पौधा आज ब्राजील, पैरागुए, चीन, अर्जेंटीना, जापान, थाईलैंड, अंगोला तथा भारतवर्ष में उगाया जा रहा है। भारतवर्ष में मुख्यतया तराई के क्षेत्रों यथा नैनीताल, बदायूँ, बिलासपुर, रामपुर, मुरादाबाद तथा बरेली तथा गंगा यमुना दोआब बाराबंकी तथा लखनऊ तथा पंजाब के कुछ क्षेत्रों यथा लुधियाना तथा जलंधर में उत्तरी-पश्चिमी भारत के क्षेत्रों में इसकी खेती की जा रही है।

इनके साथ-साथ बिहार राज्य में भी इसकी खेती प्रारंभ हो चुकी है। बिहार में बढ़ते हुए सुगंधित फसलों में मेन्था की खेती वृहत रूप से अपनाई जा रही है क्योंकि परम्परागत खेती में ज्यादा लाभकारी न होने के कारण किसानों का ध्यान मेन्था की खेती की ओर खींचता जा रहा है। इसकी खेती रबी फसल के उपरांत बाकी बचे खाली समय में खेतों में की जा रही है। इस तरह किसानों को रबी फसल के उपरांत अतिरिक्त आमदनी हासिल करने का अच्छा मौका मिल रहा है। उपयुक्त उपजाऊ क्षेत्र में सामान्य मौसम, अच्छी सुविधाएँ एवं आसानी से श्रमिक उपलब्ध होने के कारण प्रदेश में मेन्था की खेती होने की अपार सम्भावनाएँ प्रतीत हो रही हैं। प्रदेश में अपेक्षाकृत कम रासायनिक खादों एवं कीट रसायन का

मगही पान अनुसंधान केन्द्र, इसलामपुर, नालंदा, बिहार

उपयोग करना मेन्था की व्यवसायिक खेती के लिए अच्छा माना जाता है। हालाँकि बिहार में सुगंधित पौधों की खेती अभी प्रारंभिक अवस्था में है फिर भी पिछले कुछ वर्षों में मेन्था की व्यवसायिक खेती कई जिलों में वृहत स्तर पर अपनायी जा रही है। बढ़ती हुई इसकी खेती एवं इससे प्राप्त तेल एवं अन्य अवयव देश को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अपना कब्जा एवं दबदबा बनाए रखने की ओर अग्रसर है।

जापानी पोदीने की खेती की विधि

इसकी खेती एक एकवर्षीय फसल के रूप में की जाती है तथा एक वर्ष में इसकी दो से तीन कटाइयाँ ली जा सकती है। केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान (सीमैप) लखनऊ द्वारा भारतवर्ष के विभिन्न भागों में इसकी खेती को प्रोत्साहित करने की दिशा में काफी कार्य किया गया है।

उपयुक्त जलवायु

इसकी खेती के लिए समशीतोष्ण जलवायु उपयुक्त होती है। वैसे इसकी खेती उष्ण एवं उपोष्ण जलवायु में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है। फसल की अच्छी बढ़वार के लिए दिन का तापमान 30° से 0ग्रे0 एवं रात का तापमान 18° से 0ग्रे0 होना चाहिए। औषत वार्षिक

वर्षा 200–250 से 0 मी0 चाहिए। वार्षिक वर्षा की कमी को नहर अथवा ट्यूब-बेल के पानी से सिंचाई करके पूरा किया जा सकता है। बिहार की जलवायु इसकी खेती के लिए उपयुक्त है।

उपयुक्त भूमि अथवा मिट्टी

समतल, अच्छे जल निकासवाली भूमि जिसकी मिट्टी बलुई दोमट हो तथा जिसमें जीवांशों की प्रचुरता हो एवं जिसका पी0एच0 मान 6.0–7.5 हो, जापानी पुदीना की खेती के लिए अच्छी होती है। बिहार की सामान्य पी0एच0 वाली लगभग सभी प्रकार की मिट्टियों में इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है यदि पानी का उचित प्रबंध हो। क्योंकि जापानी पोदीना एक शाकीय फसल है अतः अपनी अच्छी बढ़त के लिए इसे पोषक तत्वों की काफी अधिक आवश्यकता होती है। भारी एवं चिकनी मृदाओं में इन पौधों के विकास में कठिनाईयाँ होती हैं। आलू उगाए जाने वाले खेतों में मेन्था पौधों की काफी अच्छी बढ़त होती है। इन खेतों में जल जमाव की संभावना कम रहती है।

फसल की अवधि

यह एक एकवर्षीय फसल है तथा एक वर्ष के दौरान इसकी दो से तीन कटाइयाँ ली जा सकती है। कई क्षेत्रों में इसकी दो ही

तलिका 1 : मेन्था में पाये जाने वाले प्रमुख तत्व (100 ग्राम में)

गुण	ऑकड़ों (प्रति 100 ग्राम)	गुण	ऑकड़ों (प्रति 100 ग्राम)
कार्बोहाइड्रेट	5 ग्राम	थाईमिन	0.05 मि. ग्राम
वसा	0.6 ग्राम	कैरोटीन	1620 मि. ग्राम
कैल्सियम	200 मि. ग्राम	एसकोरबिक एसिड	1 मि. ग्राम
लोहा	16 मि. ग्राम	कैलोरी	48 कि. कैलोरी

कटाइयाँ लेते हैं। इसी प्रकार कई क्षेत्रों में इसकी केवल एक ही कटाई ली जाती है, विशेषतया ऐसे संदर्भों में जहाँ मुख्य उद्देश्य अगली फसल के लिए बीज अथवा सकर्स प्राप्त करने का हो। इस प्रकार अपनी-अपनी सुविधानुसार एक, दो अथवा तीन कटाइयाँ ही लेते हैं। तीन कटाइयों के उपरांत पौधे इतने घने हो जाते हैं कि उन्हें उखाड़ना अनिवार्य ही हो जाता है अन्यथा उत्पादन नहीं मिल पाता।

उन्नतशील प्रजातियाँ

सिम. सरयू कोसी, हिमालय, कुशल, गोमती, शिवालिक। इन प्रजातियों में कुशल तेजी से बढ़ती है और इसका उत्पादन भी दूसरी प्रजातियों से लगभग दुगुना होता है। वस्तुतः मेन्था की फसल में काफी अधिक सकर्स का उत्पादन होता है। एक अनुमान के अनुसार प्रथम वर्ष में यदि एक विंटल सकर्स लगाई जाए तो एक वर्ष के उपरान्त इससे 50 गुना ज्यादा सकर्स तैयार हो जाती है। इस प्रकार आगामी फसलों के लिए सकर्स किसान के अपने ही खेत में तैयार हो जाता है अतः उसे अगली फसल हेतु बीज खरीदना नहीं पड़ता। यही वजह है कि अधिकांशतः किसान चाहकर भी अपनी फसल की पुरानी प्रजाति नहीं बदल पाते जिसके फलस्वरूप वे उन्नतशील प्रजाति से प्राप्त हो सकने वाले ज्यादा उत्पादन तथा अन्य लाभों से वंचित रह जाते हैं।

प्रवर्धन

इसका प्रवर्धन प्रायः जड़ भाग द्वारा किया जाता है जिसे सकर्स कहते हैं। 5-7 से0 मी0 लम्बा सकर्स 4-5 विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से जरूरी होता है। प्रत्येक सकर्स के टूकड़े में कम से कम एक आंख (नोड) होनी चाहिए। अच्छे सकर्स मांसल, रसीले एवं सफेद होते हैं तथा सकर्स रोगमुक्त होने चाहिए। पहले से लगाई गई फसल को उखाड़कर उसकी निचली हिस्से से सकर्स प्राप्त करते हैं। एक एकड़ में लगाने के लिए जापानी पोदीने की लगभग एक विंटल सकर्स की आवश्यकता होती है। सकर्स की दर 10 रू0 प्रति कि0 ग्रा0 से लेकर 25 रू0 प्रति कि0 ग्रा0 तक हो सकती है।

बिजाई का उपयुक्त समय—

वैसे तो जापानी पोदीने की बिजाई कभी भी (अधिक ठंड को छोड़कर) की जा सकती है परन्तु इसका सर्वाधिक उपयुक्त

समय वह रहता है जब सर्दी का मौसम लगभग समाप्त हो रहा हो तथा गर्मी का मौसम प्रारंभ हो रहा है। अतः देश के अधिकांश मैदानी क्षेत्रों तथा बिहार के क्षेत्रों में मध्य जनवरी से मध्य फरवरी तक का समय इसकी बुआई के लिए सर्वोत्तम है परन्तु जिन क्षेत्रों में रबी की फसल लगाई गई हो वहाँ उनकी कटाई के बाद 30 मार्च तक जापानी पुदीना की बुआई की जा सकती है।

खेत की तैयारी

इसकी बिजाई करने से पूर्व खेत को अच्छी प्रकार तैयार करना आवश्यक होता है। मिट्टी पलटनेवाली हल से 2-3 बार अच्छी जुताई करके मिट्टी भुरभुरी कर लें। अंतिम जुताई से पहले 15-20 टन सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट डालकर मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें। दीमक एवं सूक्ष्मकृमि की बचाव के लिए 10 विंटल प्रति हे0 की दर से नीम की खल्ली खेतों में मिलाई जाती है। यदि सिंचाई की व्यवस्था पलड इरीगेशन से करनी हो तो खेत तैयार के उपरांत खेत की छोटी-छोटी क्यारियों में विभाजित कर दें ताकि सिंचाई देने में आसानी हो। जापानी पोदीने की फसल में खरपतवार काफी आते हैं अतः इन खरपतवारों से निपटने के लिए बिजाई से पूर्व किन्हीं प्री-इमर्जेन्स वाले खरपतवार नाशकों को उपयोग किया जा सकता है, जैसे — ऑक्सीपलुरोफेन 400 मि0 ली0 मात्रा 20-20 कि0 ग्रा0 बालू रेत में मिलाकर खेत में छिड़की जा सकती है, इस तरह हर वर्ष अच्छी तरह से सड़ी हुई कम्पोस्ट, खाद, नीम की खल्ली एवं वर्मी कम्पोस्ट खेत में प्रति हे0 की दर से मिलाया जाना उपयुक्त रहता है। यथासम्भव जापानी पुदीना की खेती में किसी रासायनिक उर्वरक का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

बिजाई की विधि

जापानी पोदीने की बुआई दो विधियों द्वारा की जाती है

(अ) नर्सरी द्वारा तथा

(ब) मुख्य खेत में सीधे बुआई द्वारा।

(अ) नर्सरी द्वारा

सबसे पहले सुविधानुसार 5-10 फीट की क्यारियाँ बनाते हैं। इन क्यारियों के किनारे को लगभग एक फीट ऊँचा रखते हैं। इन क्यारियों के खरपतवार साफ कर लें। प्रत्येक क्यारी में 50 कि0 ग्रा0 गोबर की सड़ी खाद डालकर अच्छी तरह जोतकर मिट्टी भुरभुरी बनावें। तैयार

क्यारियों में धान की क्यारी की तरह ही पानी से भर दें तथा जापानी पोदीना की कटी हुई सकर्स को नर्सरी में बिखेर दें। सकर्स को बिखेरने से पहले उन्हें साफकर और रातभर गोमुत्र (एक भाग गोमुत्र तथा दस भाग पानी) में डुबोकर रखते हैं या कार्बोडजिम के 5 ली0 घोल (0.15%) से 40 कि0 ग्रा0 सकर्स को उपचार किया जा सकता है। 2-3 दिन के अन्तराल पर हल्की सिंचाई करते हैं। सिंचाई फब्बारे या स्प्रींकलर्स से करें लगभग एक से डेढ़ सप्ताह के अन्दर सकर्स उगने शुरू हो जाते हैं। 40-45 दिन के बाद जब 4 से 5 पत्ते आ जाते हैं तब पौधों को नर्सरी से उखाड़कर खेत में रोप दिया जाता है। पहले से तैयार की गई खेत में रात में एक खुला पानी छोड़ देते हैं ताकि सुबह तक खेत अच्छी तरह गीला हो जाए। इससे सुविधा यह होती है कि केवल हाथ की उँगलियों के दबाव से ही बिचड़ों को खेत में रोपित किया जाता है। पौधों को 20-35 से0 मी0 की दूरी पर लगाना चाहिए। इस विधि से बिजाई करने पर लगभग 75-100 कि0 ग्रा0 सकर्स की आवश्यकता होती है।

नर्सरी विधि से रोपाई से लाभ

(क) सकर्स की मात्रा कम लगती है एवं पौध रोपण पर खर्च में कटौती।

(ख) रबी की फसल के उपरान्त किसानों को मेन्था की फसल से अतिरिक्ति आमदनी।

(ग) खरपतवार नियंत्रण पर कम खर्च।

(ब) मुख्य खेत में सीधे बुआई—

इस विधि में नर्सरी में पौधों को तैयार करने की आवश्यकता नहीं होती है। सकर्स को सीधे मुख्य खेत में रोपाई कर दी जाती है। इस विधि में खेत को तैयार कर लेने के बाद देशी हल से मक्का की बुआई की तरह सकर्स को सीधे कूड़े में बुआई की जाती है। बुआई के बाद हल्की सिंचाई करें। यह शार्ट कर विधि है परन्तु यह विधि उपयुक्त नहीं है क्योंकि एक तो फसल के उगने के साथ ही खरपतवार भी उग आते हैं जिनके नियंत्रण में काफी खर्च आता है और दूसरा खेत में अधिक गैप रह जाने की संभावना होती है क्योंकि कुछ सकर्स में उगाव नहीं भी हो सकता है।

इस विधि से बुआई के लिए एक से दो विंटल सकर्स की रोपाई वैसे ही करते हैं जैसे धान की रोपाई करते हैं। पर खेत को केवल गीला रखते हैं। पानी लगाकर बुआई करने से फायदा यह रहता है कि

सकर्स का उगाव अधिक होता है, और खेत खाली नहीं रहता है। मुख्य खेत में पौधों को 60–45 से० मी० की दूरी पर लगाया जाना उपयुक्त रहता है।

सिंचाई

इसकी अच्छी बढ़त एवं उनकी अच्छी फसल प्राप्ति के लिए पर्याप्त सिंचाई की जरूरत होती है। अतः जहाँ सिंचाई की उचित व्यवस्था न हो वहाँ यह फसल न लगावें। खेत में हमेशा नमी बनाए रखने की आवश्यकता होती है इसलिए जल्द एवं हल्की सिंचाई अत्यंत आवश्यक है। मार्च में 10–15 दिन के अन्तर से, अप्रैल-जून में 6–8 दिन के अन्तर से तथा सर्दियों में 20–25 दिन पर हल्की सिंचाई करें। ड्रिप सिंचाई पद्धति द्वारा सिंचाई करने से समय के साथ-साथ पानी की भी बचत होती है। फसल की प्रत्येक कटाई के बाद सिंचाई अवश्य करें। खेतों में नमी की कमी होने पर फसल की वृद्धि रुक सकती है।

खाद एवं उर्वरक

सामान्यतया 150 कि० ग्रा० नाइट्रोजन, 60 कि० ग्रा० फास्फोरस तथा 40 कि० ग्रा० पोटैश प्रति हे० या 60 कि० ग्रा० नाइट्रोजन, 25 कि० ग्रा० फास्फोरस तथा 16 कि० ग्रा० पोटैश प्रति एकड़ प्रति वर्ष दिये जाने की अनुशंसा की जाती है। इनमें से फास्फोरस एवं पोटैश की पूरी मात्रा तथा नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा सकर्स रोपाई के पहले दी जानी

चाहिए। नाइट्रोजन की शेष मात्रा प्रत्येक कटाई के बाद 2 से 3 बार में देना चाहिए। यदि खेत की तैयारी के समय 15–20 टन सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट डाली गई हो तो उर्वरकों की अतिरिक्त मात्रा देने की आवश्यकता नहीं होती है।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार पुदीना की बढ़त को तो रोकते ही हैं साथ ही पुदीने के तेल में अनैच्छिक बदबू उत्पन्न कर उसकी गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं, इसलिए खरपतवार का नियंत्रण जरूरी है। खरपतवारों का नियंत्रण हाथ से निराई-गुड़ाई द्वारा तथा खरपतवारनाशी दवा के उपयोग से किया जा सकता है। अच्छे नियंत्रण के लिए कारमेक्स 80 डब्ल्यू० पी० (डाइयारॉन) 700 ग्राम प्रति हे० की दर से 600–700 लीटर पानी में घोल कर फसल के जमाव से पहले छिड़काव करें और फिर 30–40 दिन बाद हाथ से निराई करें। इसी तरह दूसरी कटाई के एक महीना बाद भी हाथ से ही एक निराई-गुड़ाई कर दें।

प्रमुख रोग तथा कीट

इस फसल पर लगने वाले प्रमुख कीट हैं— सेमीलुपर सुन्डी, रोएँदार सुन्डी एवं जालीदार कीट हैं। जिनमें सर्वाधिक नुकसान रोएँदार सुन्डी से होती है। जो कि पत्तों के हरे उत्तकों को खाकर इन्हें कागज की तरह जालीदार बना देती है। जिससे फसल को काफी हानि होती है।

इसके रोकथाम के लिए इन्डोसल्फान या क्विनेलफॉस के 150 से 200 मि० ली० प्रति एकड़ या 400–500 मि० ली० प्रति हे० की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। सेमीलुपर सुन्डी तथा जालीदार कीट के रोकथाम के लिए मालाथियॉन 50 ई० सी० का 300–400 मि० ली० प्रति हे० की दर से छिड़काव करें। कभी-कभी इस फसल पर सूत्रकृमियों का भी आक्रमण हो जाता है जिससे सकर्स में गँठे बन जाती हैं, जड़े फूल जाती हैं तथा जड़ों पर लाल धारियाँ बन जाती हैं। पौधा पीला एवं बौना हो जाता है। इसकी रोकथाम के लिए खेत की तैयारी के समय ही 5–7 क्विंटल नीम की खल्ली प्रति हे० की दर से मिट्टी में मिला दें। मेन्था को रोग से बचाव के लिये इसके सकर्स को कावेस्टीन 1०० ग्राम प्रति लीटर के घोल में या ट्राईकोडरमा विरीडि 1 प्रतिशत के घोल में 30 मिनट तक उपचारीत करना चाहिए। मेन्था में लगने वाले प्रमुख रोगों में पतियों पर लगने वाले फुफूद जनित भुरे एवं काले रंग के धब्बे हैं जो बावेटीन 1०० ग्राम प्रति लीटर के घोल को 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करने पर नियंत्रित होता है।

फसल चक्र

जापानी पोदीनें को भी चावल, गेहूँ, सरसों, हल्दी, आलू आदि के साथ फसल चक्र बनाकर लगाने की सलाह दी जाती है। जैसे— धान—आलू—पुदीना,



फसल प्रबंधन

धान— पुदीना, धान—सरसों—पुदीना इत्यादि।

फसल की कटाई

जापानी पुदीना एक वर्षीय फसल है और एक वर्ष के दौरान तीन कटाईयाँ ली जा सकती हैं। इस फसल की पहली कटाई 100–120 दिन के उपरान्त पौधों पर हल्के सफेद—जामुनी रंग के फूल दिखाई दें अर्थात् जब 60–70 प्रतिशत पौधों में फूल आ जाते हैं। पौधों की कटाई भूमि सतह से 6–8 से० मी० की ऊँचाई से करते हैं। दूसरी कटाई 70–80 दिन बाद तथा तीसरी कटाई पुनः 70–80 दिन बाद करते हैं। तीसरी कटाई के बाद पौधों का विस्तार नहीं करना चाहिए। फसल की कटाई चमकीली धूप में दोपहर के समय तेज धारदार हेंसुए से करें। फसल काटने के बाद कम से कम 6 घंटे खेत में ही पड़े रहने दें ताकि अतिरिक्त नमी सूख जाय। वैसे फसल काटने के 6 घंटे से तीन दिन के भीतर आसवन करके तेल निकाल लेना चाहिए।

आसवन की प्रक्रिया

जापानी पुदीना की खेती इसकी पत्तियों से तेल प्राप्त करने के लिए की जाती है। पत्तियों से तेल आसवन विधि से तैयार किया जाता है। प्रायः किसान लागत एवं सुविधा को देखते हुए वाष्पण विधि के अनुसार तेल हासिल करते हैं। इस विधि से चलनेवाले आसवन संयंत्र कम लागत में बनाए जाते हैं तथा किसान खेत में ही संयंत्र में ही संयंत्र स्थापित करते हैं ताकि कच्चा माल को ढोने की लागत से बचाया जाये एवं तेल की गुणवत्ता को बरकरार रखा जाए। ढेर में रखने से पत्तियों का सड़ना शुरू हो जाता है। एवं गर्मी निकलने से तेल में कमी आ जाती है। इन सभी कारणों का देखते हुए ज्यादातर किसान खेत में ही संयंत्र स्थापित करना उपयुक्त समझते हैं।

वाष्प आसवन विधि—

आसवन के लिए वाष्प आसवन विधि सर्वाधिक उपयुक्त होती है, परन्तु ये काफी महँगी पड़ती है।

तेल का उपयोग—

मेन्था के तेल से भिन्न—भिन्न प्रकार के अव्यव जैसे मेन्थाल, मेन्थाइल एसीटेट एवं मेन्थॉन प्राप्त किया जाता है। इन अवयवों एवं तेल का उपयोग औषधीय, च्युईगम, टॉफी एवं कैंडी बनाने में प्रयुक्त होते हैं। तेल का उपयोग खॉसी की दवाएँ, खुजली की दवाएँ, कण्डोमस, सिगरेट आदि में भी किया जाता है।

मेन्था फ्लेक्स, मेन्था क्रिस्टल का उपयोग टूथपेस्ट, पान मसाले, बाम, शैम्पू, बबलगम, आफ्टर सेव लोशन आदि में उपयोग होता है।

तेज की उपज

जापानी पुदीना से लगभग 250–300 कि० ग्रा० तेल प्रति हे० प्राप्त होता है। प्राप्त होने वाले तेल की मात्रा कई बातों पर भी निर्भर करती है जैसे — उगाई गई प्रजाति, फसल की वृद्धि, फसल की कटाई का समय, प्रयुक्त किया गया आसवन संयंत्र इत्यादि। फिर भी शाक की तुलना में 0.5–2 प्रतिशत तक तेल प्राप्त हो सकता है।

तेल भंडारण

एल्यूमिनियम या पोलीपैक के डिब्बों या कनस्टरों का उपयोग तेल रखने के लिए किया जाता है। तेल डब्बा में पूरा भरा होना चाहिए। डब्बा खाली रहने पर उसकी हवा का तेल की गुणवत्ता पर खराब असर पड़ता है। यदि तेल को अधिक दिनों तक सुरक्षित रखना हो तो सोडियम मेटाबाइसल्फाइड 2 ग्राम प्रति लीटर तेल की दर से भंडारित तेल में डालें।

कुल प्राप्तियाँ

यदि वर्ष भर में जापानी पोदीना की तीन कटाइयाँ ली जाएँ तथा तेल की बिक्री दर

300 रु० प्रति कि० ग्रा० मानी जाए तो किसान को एक एकड़ से लगभग 30,000 रु० की प्राप्तियाँ होती हैं। इनमें से यदि कुल खर्च हटा दिया जाए तो प्रति एकड़ 18–20,000 रु० का शुद्ध लाभ कमाया जा सकता है। तेल की बिक्री के साथ—साथ इसके पत्तों से प्राप्त होनेवाली खाद भी उपयोगी होती है, जिससे आगामी फसलों में खाद से संबंधित होने वाले खर्च को कम किया जा सकता है। इसी प्रकार एक वर्ष की खेती के उपरांत किसान को जापानी पोदीना के 40–50 क्विंटल सकर्स भी प्राप्त होंगे जिन्हें बेचकर अतिरिक्त लाभ भी कमाया जा सकता है।

निष्कर्ष— उपरोक्तानुसार जापानी पोदीना काफी उपयोगी फसल है। विशेष रूप से इसलिए भी क्योंकि इसकी खेती आसान है, इसके बीज पर ज्यादा खर्च नहीं होता, मध्य भारत की जलवायु इसके लिए काफी अनुकूल है, इसका बाजार काफी विस्तृत है, इसे पशुओं से कोई नुकसान नहीं होता तथा प्राकृतिक आपदाओं का इस पर कोई विशेष असर नहीं होता। अतः जिन क्षेत्रों में सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था हो, वहाँ के किसानों के लिए जापानी पोदीनों की खेती काफी अधिक लाभकारी है।

जापानी पोदीने की फसल पर प्रति एकड़ होने वाले आय—व्यय का विवरणः

लागत		
लागत खर्च की विभिन्न मर्दें	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष
खेत तैयार करने की लागत	1500 /—	1500 /—
बीज की लागत	1500 /—	
खाद तथा उर्वरकों की लागत	1000 /—	
खरपतवार नियंत्रण तथा निदाई—गुड़ाई पर व्यय	1000 /—	1000 /—
सिंचाई पर व्यय	800 /—	800 /—
फसल सुरक्षा पर लागत	500 /—	500 /—
फसल कटाई पर व्यय	500 /—	500 /—
आसवन पर व्यय (50 रु. प्रति कि.ग्रा. तेल)	5000 /—	5000 /—
कुल	11800 /—	9300 /—
प्राप्तियाँ		
तेल की बिक्री से प्राप्तियाँ (300 रु. प्रति कि. ग्रा. की दर से)	30,000 /—	30,000 /—
सकर्स की बिक्री से प्राप्तियाँ (25 क्विंटल सकर्स 800 रु. प्रति क्विंटल की दर से)	20,000 /—	20,000 /—
कुल प्राप्तियाँ	50,000 /—	50,000 /—
शुद्ध लाभ	38,200 /—	40,700 /—